सूरह — एक कहानी

सूरह ग़ाफ़िर

बख़्शने वाला

पूरा सफ़र — वो मोमिन जो बोला, और दुआ का दरवाज़ा —
जैसे कोई बड़े प्यार से बच्चे को सुनाता है

सूरह नं. 40 • 85 आयतें • मक्की

नूरानी इल्म

एक नज़र में सूरह

ग़ाफ़िरिज़्-ज़म्बि व क़ाबिलित्-तौबि शदीदिल्-'इक़ाबि ज़ित्-तौल

3. गुनाह बख़्शने वाला, तौबा क़ुबूल करने वाला, सख़्त सज़ा देने वाला, फ़ज़्ल वाला।

रब्बना वसि'त कुल्ल शै-इर्-रहमतंव्-व 'इल्मा

7. ऐ हमारे रब, तूने हर चीज़ को रहमत और इल्म में घेरा हुआ है।

अ तक़्तुलून रजुलन अंय्-यक़ूल रब्बियल्-लाहु व क़द जा-अकुम बिल्-बय्यिनाति मिर्-रब्बिकुम

28. क्या तुम एक आदमी को इस लिए क़त्ल करोगे कि वो कहता है मेरा रब अल्लाह है?

व उफ़व्विज़ु अम्री इलल्-लाह; इन्नल्-लाह बसीरुम्-बिल्-'इबाद

44. और मैं अपना मामला अल्लाह के सुपुर्द करता हूँ; बेशक अल्लाह बंदों को देखने वाला है।

व क़ाल रब्बुकुमुद्-'ऊनी अस्तजिब लकुम

60. और तुम्हारा रब कहता है: मुझे पुकारो, मैं तुम्हारी (दुआ) क़ुबूल करूँगा।

फ़-लम यकु यन्फ़'उहुम ईमानुहुम लम्मा र-औ ब'सना

85. तो जब उन्होंने हमारा अज़ाब देख लिया तो उनका ईमान उनके कुछ काम न आया।

एक आयत में चार नाम

बेटा, ये सूरह 'हा मीम' से खुलती है और फिर अल्लाह का एक ऐसा बयान देती है **इतना कामिल तवाज़ुन वाला** कि उलमा ने अकेले इसी से **उम्मीद और ख़ौफ़ का पूरा इल्म** सिखाया है:

'**ग़ाफ़िरिज़्-ज़म्ब** — **गुनाह बख़्शने वाला** — **व क़ाबिलित्-तौब** — और **तौबा क़ुबूल** करने वाला — **शदीदिल्-'इक़ाब** — **सज़ा में सख़्त** — **ज़ित्-तौल** — **फ़ज़्ल** वाला — ला इलाह इल्ला हुव — उसके सिवा कोई माबूद नहीं — इलैहिल्-मसीर — उसी की तरफ़ लौटना है।'

बेटा, **तरतीब** देखिए। पहले रहमत के **दो** नाम: वो गुनाह बख़्शते हैं, और वो तौबा क़ुबूल करते हैं — और ग़ौर कीजिए **ये दो अलग चीज़ें हैं।** 'ग़ाफ़िरिज़्-ज़म्ब'

उस के गुनाह को ढाँकता है जिसने शायद अभी बा-क़ायदा तौबा भी न की हो; 'क़ाबिलित्-तौब' उनकी क़ुबूलियत है **जब एक बंदा लौट आता है।** दो सिम्तों से रहमत।

फिर सख़्ती का **एक** नाम: 'शदीदिल-'इक़ाब'। और फिर **फ़ौरन वापस सख़ावत पर**: 'ज़ित्-तौल' — वसीअ बख़्शिश और फ़ज़्ल वाले।

बेटा, **रहमत तंबीह को दोनों तरफ़ से घेरे हुए है।** यूँ एक मोमिन का दिल बना होना चाहिए: **उम्मीद और ख़ौफ़ एक साथ, मगर तंबीह रहमत के अंदर बंद — कभी उल्टा नहीं।**

और फिर, बेटा, एक आयत जिसे आपको हर बार पढ़ते वक़्त **कुछ महसूस करवाना चाहिए**: '**अल्लज़ीन यह्मिलूनल्-'अर्श व मन हौलहू युसब्बिहून बि-हम्दि रब्बिहिम व यु'मिनून बिही** — जो **अर्श** को **उठाए** हैं और जो उसके इर्द-गिर्द हैं अपने रब की तारीफ़ के साथ तस्बीह करते और उस पर ईमान रखते हैं — **व यस्तग़्फ़िरून लिल्लज़ीन आमनू** — **और वो ईमान वालों के लिए मग़फ़िरत माँगते हैं।**'

और उनकी दुआ दर्ज है: '**रब्बना वसि'त कुल्ल शै-इर्-रहमतंव्-व 'इल्मा** — ऐ हमारे रब, तूने **हर चीज़** को **रहमत और इल्म** में **घेरा** हुआ है — फ़ग़्फ़िर लिल्लज़ीन ताबू वत्तब'ऊ सबीलक व क़िहिम 'अज़ाबल्-जहीम — तो उन्हें बख़्श दे जिन्होंने तौबा की और तेरी राह पर चले, और उन्हें दोज़ख़ के अज़ाब से बचा।'

'रब्बना व अद्ख़िल्हुम जन्नाति 'अद्निनिल्-लती व'अद्तहुम **व मन सलह मिन आबा-इहिम व अज़्वाजिहिम व ज़ुर्रिय्यातिहिम** — ऐ हमारे रब, और उन्हें हमेशा वाले बाग़ों में दाख़िल कर जिनका तूने उन से वादा किया, **और जो उनके बाप-दादा, उनके जोड़ों और उनकी औलाद में से नेक थे।**'

बेटा, इसकी अज़मत महसूस कीजिए। **तख़्लीक़ के सब से अज़ीम फ़रिश्ते, अर्श के उठाने वाले, आपके लिए दुआ कर रहे हैं** — और सिर्फ़ आपके लिए नहीं, बल्कि **आपके नेक वालिदैन, आपके जोड़े और आपकी औलाद** के लिए।

जुमला ग़ौर कीजिए 'वसि'त कुल्ल शै-इन **रहमतंव्-व 'इल्मा**' — **रहमत इल्म

से पहले ज़िक्र हुई।** और ग़ौर कीजिए फ़रिश्ते कैसे दुआ करते हैं: **वो अपनी दरख़्वास्त अल्लाह की रहमत का नाम ले कर शुरू करते हैं, फिर माँगते हैं।** बेटा, **यूँ दुआ करना सीखिए — पहले तारीफ़, फिर माँगना।**

वो मोमिन जिसने अपना ईमान छुपाया

और अब, बेटा, सूरह वो कहानी सुनाती है जो इसका दिल है — **एक गुमनाम आदमी की कहानी जिसकी हिम्मत क़ुरआन ने हमेशा के लिए महफ़ूज़ कर ली।**

फ़िरऔन ने मूसा (अलैहि0) को क़त्ल करने का फ़ैसला कर लिया था: 'ज़रूनी अक़्तुल मूसा वल्यद्'उ रब्बह — मुझे छोड़ो मैं मूसा को क़त्ल करूँ, और वो अपने रब को पुकारे — **इन्नी अख़ाफ़ु अंय्-युबद्दिल दीनकुम औ अंय्-युज़्हिर फ़िल्-अर्ज़िल्-फ़साद** — **मुझे डर है कि वो तुम्हारा दीन बदल देगा या ज़मीन में फ़साद फैलाएगा।**'

बेटा, ज़ालिम की ज़ुबान ग़ौर कीजिए: **वो क़त्ल को दीन और अमन के तहफ़्फ़ुज़ के तौर पर पेश करता है। ये सियासत की सब से पुरानी स्क्रिप्ट है।**

और फिर: '**व क़ाल रजुलुम्-मु'मिनुम्-मिन आलि फ़िर'औन यक्तुमु ईमानहू** — और फ़िरऔन के **ख़ानदान** का एक **मोमिन आदमी**, जो **अपना ईमान छुपाए** हुए था, बोला: **अ तक़्तुलून रजुलन अंय्-यक़ूल रब्बियल्लाहु** व क़द जा-अकुम बिल्-बय्यिनाति मिर्-रब्बिकुम — **क्या तुम एक आदमी को इस लिए क़त्ल करोगे कि वो कहता है: मेरा रब अल्लाह है** — जब कि वो तुम्हारे पास तुम्हारे रब की तरफ़ से खुली दलीलें ले आया?'

बेटा, समझिए **कौन बोल रहा है।** फ़िरऔन के **अपने दरबार** का एक आदमी — उसका ख़ानदान, उसका ताक़त का हल्क़ा। **उसने बरसों अपना ईमान छुपाया**, ज़िंदा रहते और क़रीब रहते। **और जिस दिन एक जान दाँव पर थी, वो बोला।**

और देखिए वो **कितनी महारत से दलील देता है**, बेटा। वो इस्लाम का एलान कर के फाँसी की दावत दे कर शुरू नहीं करता। **वो उन्हीं की अपनी अक़्ल से अपील

करता है:**

'**व इंय्-यकु काज़िबन फ़-'अलैहि कज़िबुह** — अगर वो **झूठा** है, तो उसका झूठ **उसी पर** — **व इंय्-यकु सादिक़ंय्-युसिब्कुम ब'अ्ज़ुल्-लज़ी य'इदुकुम** — मगर अगर वो **सच्चा** है, तो जो वो तुमसे वादा करता है **उस में से कुछ तुम्हें पहुँचेगा।**'

बेटा, **ये एक कामिल दलील है।** वो कहता है: *तुम्हारे पास खोने को कुछ नहीं अगर वो झूठा है — और सब कुछ खोने को है अगर वो सच्चा है।* **फिर उसे क़त्ल क्यों करना?**

और वो उन्हें तारीख़ याद दिलाता है — नूह की क़ौम, 'आद, समूद — और यूसुफ़ (अलैहि0) की, जो उन्हीं के पास खुली दलीलें ले कर आए थे और वो शक में रहे।

मैं अपना मामला अल्लाह के सुपुर्द करता हूँ

और अब, बेटा, उसके **आख़िरी अल्फ़ाज़** — और ये वो जुमला है जिसे मैं चाहता हूँ कि **आप याद कर लें और अपनी ज़िंदगी के सब से मुश्किल दिनों के लिए रखें।**

उसने उन्हें एक बार और ख़बरदार किया, और फिर कहा: '**फ़-सतज़्कुरून मा अक़ूलु लकुम** — तुम वो **याद** करोगे जो मैं तुमसे कह रहा हूँ — **व उफ़व्विज़ु अम्री इलल्लाह** — **और मैं अपना मामला अल्लाह के सुपुर्द करता हूँ** — **इन्नल्लाह बसीरुम्-बिल्-'इबाद** — बेशक, अल्लाह बंदों को **देखने** वाला है।'

बेटा, '**उफ़व्विज़ु अम्री इलल्लाह**' — **मैं अपना पूरा मामला अल्लाह के हवाले करता हूँ।** '**तफ़वीज़**' का मतलब **मुकम्मल तौर पर सौंप देना**, एक मामला पूरी तरह किसी और के हाथों में रख कर उस से पीछे हट जाना।

सोचिए उसकी सूरत-ए-हाल जब उसने ये कहा। **उसने अभी अभी ज़मीन के सब से ताक़तवर ज़ालिम की खुले-आम मुख़ालफ़त की थी, उस ज़ालिम के अपने दरबार में, उसके आदमियों से घिरा हुआ।** उसके पास कोई लश्कर न था, कोई फ़रार नहीं, कोई हिफ़ाज़त नहीं। **और उसका जवाब कोई मंसूबा न था — ये एक सौंपना था।**

और उस सौंपने पर अल्लाह का फ़ैसला, बेटा: '**फ़-वक़ाहुल्लाहु सय्यि-आति मा मकरू** — **तो अल्लाह ने उसे उन बुराइयों से बचा लिया जो उन्होंने प्लान कीं** — व हाक़ बि-आलि फ़िर'औन सू-उल्-'अज़ाब — और फ़िरऔन की क़ौम को **बदतरीन अज़ाब** ने **घेर लिया।**'

बेटा, **एक आदमी एक सल्तनत के ख़िलाफ़।** उसने कहा *'मैं अपना मामला अल्लाह के सुपुर्द करता हूँ* — **और अल्लाह ने उसे बचा लिया और उन्हें तबाह कर दिया।**

ये जुमला कहिए, बेटा, जब आप जो कुछ कर सकते थे कर चुकें और नतीजा आपके बस से बाहर हो: जब रिपोर्ट देनी हो, जब फ़ैसला उस के पास हो जो आपको ना-पसंद करता है, जब आप सच बोल चुकें और अब उसके नताइज के साथ जीना हो। **'व उफ़व्विज़ु अम्री इलल्लाह, इन्नल्लाह बसीरुम्-बिल्-'इबाद।'**

और इस सूरह के **दूसरे उनवान** का नाम ग़ौर कीजिए: कुछ उलमा ने इसे '**सूरह अल-मोमिन**' — **मोमिन की सूरह** — कहा **इस आदमी की वजह से।** बेटा, **हम उसका नाम तक नहीं जानते। अल्लाह ने उसे दर्ज नहीं किया। जो उन्होंने दर्ज किया वो उसका जुमला था।**

कभी आपकी विरासत आपका नाम नहीं होती; ये वो एक बात होती है जो आपने तब कही जब वो मायने रखती थी।

मुझे पुकारो, मैं क़ुबूल करूँगा

और अब, बेटा, वो आयत आती है जो शायद **पूरे क़ुरआन की सब से सख़ी खुली दावत** है:

'**व क़ाल रब्बुकुमुद्-'ऊनी अस्तजिब लकुम** — **और तुम्हारा रब कहता है: मुझे पुकारो; मैं तुम्हारी (दुआ) क़ुबूल करूँगा** — **इन्नल्-लज़ीन यस्तक्बिरून 'अन 'इबादती सयद्ख़ुलून जहन्नम दाख़िरीन** — बेशक, वो जो **मेरी इबादत से ग़ुरूर** करते हैं वो **ज़लील** हो कर जहन्नम में दाख़िल होंगे।'

बेटा, इसे खोल कर देखिए।

'**उद्ऊनी**' — **मुझे पुकारो।** *'अगर तुम चाहो'* नहीं। *'जब ज़रूरी हो'* नहीं। **ये एक हुक्म है अम्र के सीग़े में — अल्लाह आपको हुक्म दे रहे हैं कि उनसे माँगें।**

'**अस्तजिब लकुम**' — **मैं क़ुबूल करूँगा।** *'मैं शायद करूँ'* नहीं। *'अगर तुम लायक़ हो'* नहीं। **एक वादा, उस ज़ात से जो कभी वादा नहीं तोड़ता।**

बेटा, और ग़ौर कीजिए **फ़ौरन उसके बाद क्या आता है**: वो जो **मेरी इबादत से ग़ुरूर** करते हैं। यानी — **अल्लाह से माँगना इबादत है, और उनसे न माँगना ग़ुरूर कहा गया।** नबी ﷺ ने फ़रमाया: '**दुआ ही इबादत है**' — और आपने ख़बरदार किया कि **जो अल्लाह से नहीं माँगता, अल्लाह उस पर नाराज़ होते हैं।**

बेटा, सोचो ये कितना हैरत-अंगेज़ है: **लोगों से, ज़्यादा माँगना उन्हें चिढ़ा देता है; अल्लाह से, ना माँगना।**

और *'मैं क़ुबूल करूँगा'* का मतलब क्या, बेटा, जब हम सब ने ऐसी चीज़ें माँगी हैं जो हमें नहीं मिलीं? नबी ﷺ ने समझाया: **कोई मुसलमान ऐसी दुआ नहीं करता जिसमें कोई गुनाह या रिश्ता तोड़ना न हो मगर अल्लाह उसे तीन में से एक चीज़ देते हैं** — वो उसे वही दे देते हैं जो उसने माँगा, **या** वो उसे आख़िरत के लिए जमा कर देते हैं, **या** वो उस से उसके बराबर कोई बुराई हटा देते हैं। सहाबा ने कहा: *तो हम बहुत माँगेंगे।* आपने फ़रमाया: **अल्लाह के पास और भी ज़्यादा है।**

बेटा, तो **हर एक दुआ क़ुबूल होती है। एक भी फेंकी नहीं जाती।** कुछ जवाब उस चीज़ के तौर पर आते हैं जो आप चाहते थे; **कुछ उस आफ़त के तौर पर जिसे आप कभी जानते भी न थे कि आपकी तरफ़ आ रही थी;** और कुछ **एक ऐसे अकाउंट में जमा किए जा रहे हैं जिसे आप उस दिन तक नहीं खोलेंगे जब आपको उनकी सब से ज़्यादा ज़रूरत होगी।**

तो माँगो, बेटा। **छोटी चीज़ें और बड़ी चीज़ें माँगो। अपनी ज़ुबान में माँगो।** गाड़ी चलाते, खाना पकाते, जागते लेटे हुए माँगो। **दावत खुली है और क़ुबूल करने वाला नहीं थकता।**

वो ईमान जो बहुत देर से आया

फिर सूरह मुनकिरों की दलीलों और अल्लाह के जवाबों से गुज़रती है — और **ग़ुरूर** के बारे में एक होला देने वाली लाइन शामिल करती है: '**इन्नल्-लज़ीन युजादिलून फ़ी आयातिल्लाहि बि-ग़ैरि सुल्तानिन अताहुम** — जो अल्लाह की निशानियों में **बिना किसी दलील** के झगड़ते हैं — **इन फ़ी सुदूरिहिम इल्ला किब्रुम्-मा हुम बि-बालिग़ीह** — उनके सीनों में **ग़ुरूर** के सिवा कुछ नहीं, **जिसे वो कभी न पाएँगे।**'

बेटा, '**मा हुम बि-बालिग़ीह**' — एक **बड़ाई जिसे वो कभी न पहुँचेंगे।** **मग़रूर शख़्स एक ऐसे मक़ाम का पीछा कर रहा है जो उसे कभी हक़ीक़तन नहीं मिलेगा।** और इसका इलाज ठीक अगले अल्फ़ाज़ में दिया गया: '**फ़स्त'इज़ बिल्लाह** — तो **अल्लाह की पनाह माँगो।**' बेटा, **ग़ुरूर को एक ऐसी चीज़ की तरह समझा गया जिस से पनाह माँगी जाए, एक बीमारी की तरह।**

और फिर एक मुक़ाबला जो किसी को भी आजिज़ कर दे: '**ल-ख़ल्क़ुस्-समावाति वल्-अर्ज़ि अक्बरु मिन ख़ल्क़िन्-नास** — **आसमानों और ज़मीन की तख़्लीक़ इंसान की तख़्लीक़ से बड़ी है** — व लाकिन्न अक्सरन्-नासि ला य'लमून — मगर ज़्यादातर लोग नहीं जानते।'

बेटा, **एक रात के आसमान की तरफ़ देखिए और फिर अपने आप को देखिए।** और फिर भी इंसान ज़मीन पर **अपनी अहमियत से फूला** घूमता है।

और फिर सूरह का इख़्तिताम, बेटा — और ये एक ऐसा मंज़र है जिसे हर इंसान को याद रखना चाहिए। अल्लाह उन क़ौमों का ज़िक्र करते हैं जो अपने से पहले वालों से ज़्यादा ताक़तवर थीं, और फिर बताते हैं कि आख़िर-कार क्या हुआ:

'**फ़-लम्मा र-औ ब'सना क़ालू आमन्ना बिल्लाहि वह्दहू व कफ़र्ना बिमा कुन्ना बिही मुश्रिकीन** — तो **जब उन्होंने हमारा अज़ाब देख लिया**, उन्होंने कहा: **हम अकेले अल्लाह पर ईमान लाए, और हम उसका इनकार करते हैं जो हम शरीक ठहराते थे!**'

बेटा, **वो लम्हा देखिए। यही वो एलान है जिसे अल्लाह उनसे सारी उम्र सुनना चाहते थे। लफ़्ज़-ब-लफ़्ज़ ठीक। तौहीद, कामिल।**

और फिर जवाब आता है:

'**फ़-लम यकु यन्फ़'उहुम ईमानुहुम लम्मा र-औ ब'सना** — **तो उनका ईमान उनके कुछ काम न आया जब उन्होंने हमारा अज़ाब देख लिया** — **सुन्नतल्लाहिल्-लती क़द ख़लत फ़ी 'इबादिह** — ये अल्लाह की वो **सुन्नत** है जो उसके बंदों में **गुज़र चुकी** — **व ख़सिर हुनालिकल्-काफ़िरून** — और वहीं मुनकिर **घाटे** में पड़ गए।'

बेटा, **यही सब से सख़्त सबक़ है जो ये सूरह देती है।** ईमान की एक **मियाद** है। जिस लम्हे पर्दा उठ जाता है और अज़ाब आँखों के सामने आ जाता है — **उस वक़्त का ईमान क़ुबूल नहीं।** क्योंकि तब वो ईमान नहीं रहता; **वो सिर्फ़ एक हक़ीक़त का इक़रार होता है जिस से अब बचा नहीं जा सकता।**

और इसी लिए, बेटा, फ़िरऔन ने भी डूबते हुए यही कहा था — और उसे भी क़ुबूल न किया गया।

तो **आज ईमान लाइए, जब आप इनकार भी कर सकते हैं।** क्योंकि ईमान की क़ीमत इसी में है कि वो **देखे बग़ैर** लाया जाए। **वो दरवाज़ा अभी खुला है — और सिर्फ़ अभी।**

इस सूरह से क्या सीखा

1. चार नामों की तरतीब याद रखिए — रहमत तंबीह को दोनों तरफ़ से घेरे हुए है; उम्मीद और ख़ौफ़ इसी तवाज़ुन में रखिए।

2. अर्श के उठाने वाले फ़रिश्ते आपके, आपके वालिदैन, आपके जोड़े और आपकी औलाद के लिए दुआ कर रहे हैं।

3. दुआ यूँ कीजिए जैसे फ़रिश्ते करते हैं: पहले उसकी रहमत का ज़िक्र, फिर माँगना।

4. ज़ालिम हमेशा ज़ुल्म को 'दीन और अमन के तहफ़्फ़ुज़' के तौर पर पेश करता है — ये सब से पुरानी स्क्रिप्ट है।

5. 'व उफ़व्विज़ु अम्री इलल्लाह' — जब आप अपना हिस्सा कर चुकें और नतीजा आपके बस से बाहर हो, यही कहिए।

6. आपकी विरासत आपका नाम नहीं — वो एक बात है जो आपने तब कही जब वो मायने रखती थी।

7. 'उद्'ऊनी अस्तजिब लकुम' — न माँगना ग़ुरूर है; और ईमान की एक मियाद है, तो आज ईमान लाइए जब आप इनकार भी कर सकते हैं।

या ग़ाफ़िरज़्-ज़म्ब, या क़ाबिलत्-तौब — हमारे गुनाह ढाँप दीजिए, हमारी तौबा क़ुबूल कीजिए, और हमें उन में मत बनाइए जिनका ईमान देर से आया। आमीन।